Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

कक्षा 10 – हिंदी

महामैराथन क्लास

पद्यांश

भक्ति

सन्दर्भ-प्रस्तुत पद्यांश कविवर बिहारीलाल द्वारा रचित 'बिहारी सतसई' से हमारी पाठ्य-पुस्तक के काव्य-खण्ड में संकलित 'भक्ति' शीर्षक से उद्धृत है।

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोई।
जा तन की झाँई परै स्यामु हरित-दुति होइ।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-श्रृंगार एवं शांत, छन्द-दोहा, अलंकार-काव्यलिंग, श्लेष, अनुप्रास, भाषा- ब्रज, गुण-प्रसाद, माधुर्य।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर-उपर्युक्त
2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर-**व्याख्या**- कविवर बिहारी विघ्न सामाप्ति के लिए राधा की स्तुति करते हुए कहते हैं कि जिनके शरीर की झलक पड़ने से श्रीकृष्ण परम आनंदित हो जाते हैं ऐसी चतुर राधा जी मेरे सांसारिक कष्टों को दूर करें।

3. बिहारी जी किससे अपनी बाधाओं को दूर करने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं?

उत्तर- राधा जी से।

4. श्रीकृष्ण किसके शरीर की झलक पड़ने से अनंदित हो जाते हैं?

उत्तर- राधा जी की।

मोर-मुकुट की चन्द्रिकनु, यौं राजत नँदनंद।

मनु ससि सेखर की अकस, किय सेखर सत चन्द।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-श्रृंगार एवं शांत, छन्द-दोहा, अलंकार-उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, भाषा- ब्रज, गुण-माधुर्य

Gyansindhu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

उत्तर- उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर-व्याख्या-श्रीकृष्ण अपने मस्तक पर शत-शत चन्द्रमाओं से अंकित मयूर पंखों का किरीट मुकुट धारण करने से ऐसे सुशोभित हो रहे हैं, मानो शंकर जी से स्पर्द्धा करने के लिए ही उन्होनें सैकड़ों चन्द्रमाओं को धारण कर लिया हो।

3. **श्रीकृष्ण का मस्तक कैसा सुशोभित हो रहा है?**

उत्तर- श्रीकृष्ण अपने मस्तक पर शत-शत चन्द्रमाओं से अंकित मयूर पंखों का किरीट धारण करने से ऐसे सुशोभित हो रहे हैं, मानो शंकर जी से स्पर्द्धा करने के लिए ही उन्होनं सैकड़ों चन्द्रमाओं को धारण कर लिया हो।.

सोहत ओढ़ै पीतु पटु, स्याम सलौने गात।
मनौ नीलमनि सैल पर, आतपु पर्‌यौ प्रभात।।

काव्यगत सौंदर्य–रस–श्रृंगार, छन्द–दोहा, अलंकार–उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, भाषा– ब्रज, गुण–माधुर्य

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर– उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
   उत्तर–व्याख्या–वे (श्रीकृष्ण) अपने सुन्दर शरीर पर पीताम्बर धारण करके इस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं, मानो नीलमणि पर्वत पर प्रातःकाल के सूर्य की पीली–पीली किरणें पड़ रही हों।

3. **भगवान कृष्ण साँवले सुन्दर शरीर पर क्या धारण किये हुए हैं?**
   उत्तर–पीला वस्त्र।

4. **साँवले सुन्दर शरीर पर पीताम्बर धारण किये हुए श्री कृष्ण किस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं?**

उत्तर- श्रीकृष्ण अपने सुन्दर शरीर पर पीताम्बर धारण करके इस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं, मानो नीलमणि पर्वत पर प्रातःकाल के सूर्य की पीली-पीली किरणें पड़ रही हों।

(4) **अधर धरत हरि कै परत, ओठ-डीठि-पट-जोति।**
हरित बाँस की बाँसुरी, इन्द्रधनुष रंग होति।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-श्रृगार, छन्द-दोहा, अलंकार-यमक, तद्‌गुण, भाषा- ब्रज, गुण-माधुर्य

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
उत्तर- उपर्युक्त।

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**
उत्तर-व्याख्या-श्रीकृष्ण के अपने अधर पर धरण करते ही और उस पर होठ, नेत्र तथा पीताम्बर की ज्योति पड़ते ही, वह हरे बाँस की बाँसुरी इन्द्रधनुष के रंग की हो जाती है। भाव यह है कि होठ की लालिमा, नेत्रों की श्यामता तथा पीताम्बर की पीतिमा के साथ बाँसुरी की हरीतिमा मिलकर विविध रंग धारण कर लेती है।

3. जब श्रीकृष्ण बांसुरी को अपने होंठों पर रखते हैं तो बांसुरी कैसी हो जाती है?

उत्तर- वह हरे बाँस की बाँसुरी इन्द्रधनुष के रंग की हो जाती है।

जगतु जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाँहि।
ज्यौं आँखिनु सबु देखिये, आँखि न देखी जाँहि।।
जप, माला, छापा, तिलक, सरै न एकौ कामु।
मन-काँचे नाचे वृथा, साँचे राँचे रामु।।

काव्यगत सौंदर्य-रस-शांत, छन्द-दोहा, अलंकार-दृष्टान्त, भाषा- ब्रज, गुण-प्रसाद

1. उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त.

Gyansindhu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–व्याख्या– जिस वर ने संपूर्ण संसार को इंद्रिय ज्ञान का विषय बनाया, उस ईश्वर को ही तूने नहीं जाना। जिस प्रकार आँखों के द्वारा सबको देखा जाता है, पर स्वयं आँखों को नहीं देखा जाता, उसी प्रकार ईश्वर भी ज्ञानातीत है।

भक्ति के मार्ग में बाह्य आडम्बरों जैसे लोक दिखावे में जप करना, लोगों को दिखाने के लिए गले में माला पहनना, अपनी प्रसिद्धि हेतु तरह-तरह के तिलक-छापे लगाना आदि से एक भी काम सिद्ध नहीं होता। जब तक तुम्हारा मन कच्चा रहेगा तब तक व्यर्थ ही नाचते रहोगे। राम तो तभी प्रसन्न होंगे जब तुम सच्चे मन से उनकी शरण में जाओगे।

3. सच्चे मन में कौन निवास करता है?

उत्तर–सच्चे मन में राम निवास करते हैं।

सन्दर्भ-प्रस्तुत पद्यांश कविवर **सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित **'युगवाणी'** काव्य संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक के काव्य-खण्ड में संकलित **'चींटी'** शीर्षक से उद्धृत है।

चींटी को देखा?
वह सरल, विरल, काली रेखा
तम के तागे-सी जो हिल-डुल,
चलती लघुपद पल-पल मिल-जुल,
वह है पिपीलिका पाँति! देखो ना, किस भाँति।
काम करती वह सतत!
कन-कन करके चुनती अविरत!
गाय चराती, धूप खिलाती, बच्चों की निगरानी करती,
लड़ती, अरि से तनिक न डरती,
दल के दल सेना सँवारती, घर आँगन, जनपथ बुहारती।

काव्यगत सौंदर्य –रस–शांत, छन्द–मुक्त, अलंकार–उपमा, पुनःक्तिप्रकाश, अनुप्रास, भाषा–साहित्यिक खड़ी बोली, गुण–प्रसाद

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

   उत्तर- उपर्युक्त।

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

   उत्तर–**व्याख्या**–चींटी की कर्मठता पर प्रकाश डालते हुए पन्त जी कहते हैं–क्या आपने चींटी को कभी ध्यान पूर्वक देखा है? वह सीधी पतली और काली रेखा जो काले धागे के समान हिलती डुलती हुई अपने छोटे पैरों द्वारा प्रतिपल मिल–जुल कर चलती है।

   वह चींटियों की पंक्ति है देखो ये चींटियां किस प्रकार अपने कार्य में निरन्तर लगी हुई हैं। वे अपने लिए भोजन सामग्री एकत्र करने हेतु कठोर परिश्रम करती हैं वे एक–एक कण को बिना किसी रुकावट के इकट्ठा करती है। चींटियों की भी अपनी गायें होती हैं। वे उन्हें चराती हैं और यथा समय उन्हें धूप का सेवन कराती हैं। अण्डों बच्चों की देखभाल करती है। तथा

निडर होकर शत्रुओं से भी भिड़ जाती हैं। चींटियाँ दल के दल सुन्दर सेना भी सवाँरती हैं। बहुत सी गंदी चीजें भी उठाकर ले जाती हैं जिससे घर आँगन और रास्ते को साफ कर देती हैं।

3. कवि 'वह है पिपीलिका पाँति' के द्वारा जीवन के किस आदर्श के प्रति संकेत करता है?

उत्तर–'वह है पिपीलिका पाँति' के द्वारा कवि जीवन के इस आदर्श की ओर संकेत करना चाहता है कि चींटियाँ अनुशासन में रहकर कार्य करती हैं और निरन्तर कर्म में तल्लीन रहती है। मनुष्यों को भी चींटी के इन आदर्शो को अपनाना चाहिए।

4. पन्त जी ने चींटी को किसका प्रतीका माना है?

उत्तर– चींटी को क्रियाशील श्रमिक का प्रतीक माना है।

5. चींटी कविता से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर–हमें यह शिक्षा मिलती है चींटी की भांति हमें भी अनुशासन में रहकर निरन्तर कार्यो में संलग्न रहना चाहिए।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश कविवर **सुमित्रानन्दन पन्त** द्वारा रचित **'ऋता'** काव्य संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक के काव्य-खण्ड में संकलित **'चन्द्रलोक में प्रथम बार'** शीर्षक से उद्धृत है।

चन्द्रलोक में प्रथम बार, मानव ने किया पदार्पण,
छिन्न हुए लो, देश काल के, दुर्जय बाधा बंधन!
दिग्विजयी मनु-सुत, निश्चय यह महत् ऐतिहासिक क्षण,
भू-विरोध हो शांत, निकट आएँ सब देशों के जन।

काव्यगत सौंदर्य -रस-वीर रस, छन्द-मुक्त, अलंकार-:पक, पुन:क्तिप्रकाश, अनुप्रास, भाषा-साहित्यिक खड़ी बोली, गुण-ओज

1. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

Gyansindhu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

उत्तर-व्याख्या-आज नील आर्मस्ट्रांग जैसे मानव ने पहली बार चन्द्रमा पर अपने कदम रखे हैं इस घटना के साथ ही देश और काल से जुड़ी बाधाओं के न जीते जा सकने वाले बन्धन छिन्न-भिन्न होकर बिखर गये हैं।

आज निश्चय ही मानव ने दिग्विजय प्राप्त कर ली है।ऐतिहासिक दृष्टि से ये बहुत महत्वपूर्ण क्षण सिद्ध होता है कवि मंगल कामना करता हुआ कहता है कि पृथ्वी पर दिखाई देने वाले समस्त विरोध शांत हों। सभी देशों के जन एक दूसरे के समीप आ जाएँ अर्थात आपसी सौहार्द स्थापित करें।

2. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

उत्तर- उपर्युक्त

3. **कवि ने किस कार्य को ऐतिहासिक क्षण कहा है?**

उत्तर- कवि ने मनुष्य के प्रथम बार चन्द्रलोक पर कदम रखने कोऐतिहासिक क्षण कहा है।

युग-युग का पौराणिक स्वप्न, हुआ मानव का संभव,
समारंभ शुभ नये चंद्रयुग का भू को दे गौरव!
फहराए ग्रह उपग्रह में धरती का श्यामल अंचल,
सुख संपद् संपन्न जगत् में बरसे जीवन मंगल!
अमरीका सोवियत बनें नव दिक् रचना के वाहन
जीवन पद्धतियों के भेद समन्वित हों, विस्तृत मन!

काव्यगत सौंदर्य -रस-वीर रस, छन्द-मुक्त, अलंकार-:पक, पुन:क्तिप्रकाश, अनुप्रास, भाषा-साहित्यिक खड़ी बोली, गुण-ओज

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

उत्तर- उपर्युक्त।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–व्याख्या–सारा संसार बहुत पुराने समय से चन्द्रमा के बारे में सुनहले स्वप्न देखा करता था। आज मानव ने चन्द्रलोक में पहुँचकर मानो उस स्वप्न को पूरा कर लिया है। चन्द्र–युग का यह मंगलकारी प्रारम्भ पृथ्वी को गरिमामण्डित करे- यह कवि की शुभकामना है। इस घटना से चन्द्रमा तक पृथ्वी का सम्बन्ध जुड़ा है, अतः उसके फलस्वरूप पृथ्वी की गरिमा बढ़ी है।

अब धरती का हरा–भरा अंचल ग्रहों और उपग्रहों सब जगह फहराए समस्त संसार में सुख व सम्पत्ति की प्रचुरता हो और जीवन में कल्याण–ही–कल्याण हो–कवि की यही मंगल–कामना है चन्द्रलोक पर प्रथम बार मानव के उतरने पर कवि मंगल–कामना करता है कि अमेंरिका और रूस जैसे विशाल और शक्तिसम्पन्न देश, दिशाओं की नई एवं श्रेष्ठ रचना के संवाहक बने। उसी प्रकार समस्त संसार के प्राणियों के जीवन–मार्गो में समन्वय स्थापित हो और सभी का मन विशाल और उदार बने।

3. मानव का कौन-सा स्वप्न पूर्ण हुआ?

उत्तर- सारा संसार बहुत पुराने समय से चन्द्रमा के बारे में सुनहले स्वप्न देखा करता था। आज मानव ने चन्द्रलोक में पहुँचकर मानो उस स्वप्न को पूरा कर लिया है।

अणु-युग बने धरा जीवन हित स्वर्ग सृजन का साधन,
मानवता ही विश्व सत्य भू-राष्ट्र करें आत्मार्पण।
धरा चन्द्र की प्रीति परस्पर जगत प्रसिद्ध, पुरातन,
हृदय-सिंधु में उठता स्वर्गिक ज्वार देख चन्द्रानन!

काव्यगत सौंदर्य- रस-शांत, छन्द-मुक्त, अलंकार-अनुप्रास, भाषा-साहित्यिक खड़ी बोली, गुण-प्रसाद

1. उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त।

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-व्याख्या-पन्त जी की कामना है कि विज्ञान का सम्पूर्ण विकास मानव के कल्याण के लिए हो अर्थात अणु-शक्ति का प्रयोग मानव-संहार के लिए न होकर, मानव-कल्याण के लिए हो। इसके विकास से संसार के आपसी द्वेषों का नाश हो जाए और उनके स्थान पर सद्भावना और भ्रातृ-प्रेम का उदय हो, जिससे यह पृथ्वी: स्वर्ग के समान सुखी और सम्पन्न हो जाए अर्थात यह अणु-युग, पृथ्वी पर स्वर्ग के निर्माण का साधन बने। मानवता ही केवल इस संसार में एक सत्य है, अन्य वस्तुएँ तो मिथ्या हैं। सच्ची मानवता के लिए सभी राष्ट्रों को अपनी स्वार्थ-भावना त्याग देनी चाहिए और उसके प्रति आत्मसमर्पण कर देना चाहिए, तभी पृथ्वी पर विभिन्न राष्ट्रों के बीच के भेदभाव की खाई समाप्त होगी और विश्व में मानवता का साम्राज्य होगा।

पन्त जी कहते हैं कि पृथ्वी और चन्द्रमा का प्रेम बहुत पुरान है। विद्वानों का विश्वास है कि चन्द्रमा पहले पृथ्वी का ही एक टुकड़ा था जो टूटकर, छिटककर अलग हो गया। आज भी

पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा को देखकर सागर के हृदय में ज्वार आता है। यह मानो पृथ्वी और चन्द्रमा के पुरातन सम्बन्ध और प्रेम का ही परिचायक है।

3. 'अणु-युग बने धरा जीवन हित स्वर्ग सृजन का साधन' पंक्ति से क्या आशय है?

उत्तर- 'अणु-युग बने धरा जीवन हित स्वर्ग सृजन का साधन' पंक्ति से आशय है कि विज्ञान का सम्पूर्ण विकास मानव के कल्याण के लिए हो अर्थात अणु-शक्ति का प्रयोग मानव-संहार के लिए न होकर, मानव-कल्याण के लिए हो।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश कवयित्री **महादेवी वर्मा** द्वारा रचित **‘सांध्यगीत’** काव्य संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक के काव्य-खण्ड में संकलित **‘हिमालय से’** शीर्षक से उद्धृत है।

टूटी है तेरी कब समाधि,
झंझा लौटे शत हार-हार,
बह चला दृगों से किन्तु नीर,
सुनकर जलते कण की पुकार!
सुख से विरक्त दुःख में समान!

काव्यगत सौंदर्य -रस-शांत, छन्द-मुक्त, अलंकार-मानवीकरण, पुन:क्तिप्रकाश,:पकातिशयोक्ति, भाषा-साहित्यिक खड़ी बोली, गुण-प्रसाद।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

उत्तर- उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-**व्याख्या**-हे हिमालय! तू कठोर तपस्वी की भाँति समाधि लगाए हुए है। इस समाधि को आँधी के सैकड़ों झटके भी भंग नहीं कर सके। वे तो केवल टकराए और हार मानकर ही लौट गए।एक ओर तो तुममें इतनी कठोरता है और दूसरी ओर जब तुमने तीव्र धूप से तपे हुए, धूल के कण की चीत्कार सुनी, तो दया के कारण तुम्हारे नेत्रों से जलधारा फूट पड़ी। तुम सुख की कामना नहीं करते, अपितु सुख-दुःख में समान रहने वाले योगी हो।

3. हिमालय के कैसे स्व:प को दर्शाया गया है?

उत्तर-हिमालय जहाँएक ओर कठोर है वहीं दूसरी तरफ उसके कोमल क:ण स्व:प को दर्शाया गया है।

4. जलते हुए कण की पुकार सुनकर किसकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी?

उत्तर-हिमालय की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी।

5. महादेवी वर्मा जी ने हिमालय को किस रूप में देखा है?

उत्तर–महादेवी वर्मा जी ने हिमालय को कोमल एवं कठोर दोनों:पों में देखा है।

मेरे जीवन का आज मूक,
तेरी छाया से हो मिलाप,
तन तेरी साधकता छू ले,
मन ले करूण की थाह नाप!
उर में पावस दृग में विहान!

काव्यगत सौंदर्य –रस–शांत, छन्द–मुक्त, अलंकार–उपमा, अनुप्रास, भाषा–साहित्यिक खड़ी बोली, गुण–प्रसाद

1. उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर–उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–**व्याख्या–** महादेवी वर्मा जी कहती हैं हे गिरिराज! मेरी तो यही कामना है कि मेरे जीवन की मौन भावना तुम्हारी विस्तृत छाया से मिल जाए। मेरा शरीर भी साधना की उस सीमा तक पहुँच जाए, जहाँ तक तुम्हारी साधना पहुँची है। मेरा मन भी उतना ही क:णापूर्ण हो जाए, जितनी क:णा तुम्हारे हृदय में भरी हुई है। मेरे हृदय में भी वर्षा का निवास है तथा नेत्रों में प्रातःकालीन सौन्दर्य विद्यमान है। कवयित्री का तात्पर्य यह है कि जिस प्रकार हिमालय सारे कष्टों, संकटों, आँधी, वर्षा आदि को झेलता है, उसी प्रकार मैं भी संकटों के आने पर अपने जीवन के आदर्शों से विचलित न हो सकूँ।

3. उक्त पंक्ति में महादेवी जी की क्या इच्छा है?

उत्तर– महादेवी वर्मा जी अपने जीवन को हिमालय के समान ढालना चाहती हैं। उनकी यही इच्छा है कि उनके जीवन की मौन भावना हिमालय की विस्तृत छाया से मिल जाए। मेरा शरीर भी

साधना की उस सीमा तक पहुँच जाए, जहाँ तक तुम्हारी साधना पहुँची है। मेरा मन भी उतना ही क:णापूर्ण हो जाए, जितनी कणा तुम्हारे हृदय में भरी हुई है। मेरे हृदय में भी वर्षा का निवास है तथा नेत्रों में प्रातःकालीन सौन्दर्य विद्यमान है।

नभ में गर्वित झुकता न शीश,
पर अंक लिये है दीन क्षार।
मन गल जाता नत विश्व देख,
तन सह लेता है कुलिश भार!
कितने मृदु कितने कठिन प्राण!

काव्यगत सौंदर्य– छन्द–मुक्त, अलंकार–मानवीकरण, उपमा, अनुप्रास, भाषा–साहित्यिक खड़ी बोली, गुण–प्रसाद।

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

   उत्तर- उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

   उत्तर-व्याख्या-हे हिमालय! तुम आकाश में सिर ऊँचा किए हुए गर्व से खड़े हुए हो। तुम्हारा सिर किसी के सामने नहीं झुकता। तुम इतने महान हो कि दीन-हीन मिट्टी को भी अपनी गोद में लिए हुए हो। संसार को अपने सामने झुका हुआ देखकर तुम्हारा मन दया से पिघल जाता है। तुम्हारा शरीर कठोर भार को भी सहन कर लेता है। हे हिमालय! तुम अन्दर से कोमल हो, किन्तु कठोरता को भी सहन करने की शक्ति रखते हो।

3. **कविता में प्रयुक्त शब्द 'स्वर्ण रश्मि' का समास विग्रह कर समास का नाम लिखिए।**

   उत्तर-'स्वर्ण रश्मि' = स्वर्ण की रश्मि = कर्मधारय समास

4. **किसका शीश किसी के सम्मुख कभी नहीं झुकता?**

   उत्तर- हिमालय का